JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सम्राट् मुक्तापीड् ललितादित्य द्वारा निर्मित मार्तण्ड मन्दिर कल्हण राजतरङ्गिणी के सन्दर्भ में

शोधार्थी
पूजा ठाकुर
संस्कृत–विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
समरहिल, शिमला–171005
मोबाईल : 821979836

शोध–निर्देशक
डॉ॰ लता देवी
सहायक आचार्य
संस्कृत–विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
समरहिल, शिमला–171005

ई॰मेल–pujathakur931@gmail.com

शोध संक्षेप

कल्हण राजतरङ्गिणी में वर्णित दुर्लमवर्धन नामक व्यक्ति ने कश्मीर में कार्कोट राजवंश की स्थापना की थी। वह गोनन्द वंश के अंतिम शासक बालादित्य का एक पदाधिकारी था। गोनन्द वंश ने कार्कोट वंश से पूर्व कश्मीर पर शासन किया था। हुएनसांग ने भी जब कश्मीर की यात्रा की थी उस समय वहाँ कार्कोट वंश का शासन था।

उपरोक्त अध्ययन के विषय के अन्तर्गत आठवीं शताब्दी के कार्कोट वंशीय सम्राट् मुक्तापीड् ललितादित्य की सांस्कृति उपलब्धियों से अवगत करवाना है। उसने अधिकांश समय युद्ध क्षेत्र में व्यतीत करने पर भी कश्मीर में निर्माण कार्य को किसी प्रकार से उपेक्षित नहीं होने दिया। जिसके परिणाम स्वरूप प्रासादों, मन्दिरों, मठों, मूर्तियों, नगरों आदि का निर्माण करवाया। सम्राट् मुक्तापीड ललितादित्य ने परिहासपुर नामक नगर की स्थापना कर, उसे राजधानी बनाया एवं वहां पर एक समान लागत से परिहासकेशव की रजत, मुक्ताकेशव की सुवर्ण, महावराह की सुवर्ण, श्री गोवर्धन की रजत तथा बृहद् बुद्ध की ताम्र प्रतिमाओं का निर्माण करवाया था, जिनके अवशेष आज भी कश्मीर में देखने को मिलते है। उसने मार्तण्ड सूर्य मन्दिर का भी निर्माण करवाया था, जो भारत वर्ष के पुराकालीन भारतीय वस्तुमूर्ति एवं भास्कर कला में एक विशिष्ट स्थान रखता है। जिसका भग्नावशेष अभी भी प्रभावोत्पादक एवं विश्व की सर्वश्रेष्ठ कालकृतियों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उपरोक्त विषय अध्ययन में यह भी बताया गया है कि यह कश्मीरी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना था जिसे गांधार, गुप्त और चीनी वास्तुकला रूपों को मिश्रित कर बनाया गया था। कश्मीर में इस्लामीकरण के चलते सिकंदर शाह मीर (1389–1413ई॰) ने इस मन्दिर को नष्ट कर दिया था। अब केवल इसके भग्नावशेष देखने को मिलते है।

अध्ययन के विषय का मुख्य उद्देश्य कश्मीर में कार्कोट हिन्दु वंश शासक मुक्तापीड ललितादित्य की सांस्कृतिक उपलब्धियों एवं तत्कालीन कश्मीर एक समृद्ध राज्य था, इससे अवगत करवाना है। जिसका अनुमान हम प्राप्त खण्डहरों एवं पुरातात्विक अवशेषों से लगा सकते है।

भूमिका

कश्मीर का प्राचीन भारत में शेष भारत के साथ बहुत गहरा और अविछिन्न राजनैतिक सम्बन्ध तो नहीं बतलाया गया है, परन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से कश्मीर कभी भी भारत से पृथक् नहीं रहा है। प्राचीन भारत में बहुत समय तक कश्मीर क्षेत्र संस्कृत विद्या के प्रमुख केन्द्र के रूप में भी रहा है। परम्परागत रूप से भी कश्मीर का साहित्य पूर्ण रूप से संस्कृत में ही था। कश्मीर पर माँ शारदा का आशीर्वाद था और कश्मीर में भारत के बहुत से प्रसिद्ध संस्कृत साहित्यकार रहे है। जिनमें से प्रमुख नागसेन, वाग्भट, भामह, आनन्दवर्धन, वसु गुप्त, रूद्रह, अभिनवगुप्त, उत्पल, क्षेमेन्द्र बिल्हण एवं राजतरङ्गिणी के रचयिता कल्हण आदि विश्व प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान रहे है। राजतरङ्गिणी कश्मीर के राजनीतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक विवरण, सामाजिक व्यवस्था, साहित्य समृद्धि तथा आर्थिक दशा को जानने के लिये सचमुच एक विश्वकोश साबित हुआ है। कल्हण द्वारा रचित राजतरङ्गिणी में आठ तरङ्गों में विभाजित है। कल्हण ने कश्मीर के अत्यन्त प्राचीन काल के शासकों से लेकर 12वीं शताब्दी तक के राजाओं का प्रमाणिक विवरण प्रस्तुत किया है।[1]

राजतरङ्गिणी के चतुर्थ तरङ्ग में वर्णन मिलता है कि सातवीं शताब्दी में दुर्लभवर्धन नामक व्यक्ति ने कश्मीर में कार्कोट की स्थापना राजवंश की स्थापना की थी। वह गोनन्द वंश के अन्तिम शासक बालादित्य का एक पदाधिकारी था। गोनन्द शासक बालादित्य ने अपनी पुत्री अनङ्गलेखा का विवाह दुर्लभवर्धन से किया। हुएनसांग ने भी जब कश्मीर यात्रा की थी उस समय पर भी कार्कोट वंश कश्मीर पर शासन कर रहा था।

इसी वंश में दुर्लभवर्धन का पौता और दुर्लयक का पुत्र मुक्तापीड ललितादित्य एक महत्वपूर्ण शासक रहा है वह मध्यकाल में कश्मीर का प्रमुख शासक था। उसका शासन काल आठवीं शताब्दी में रहा था। सम्राट मुक्तापीड ललितादित्य की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ उसकी महत्वकांक्षा के ही अनुरूप थी। यद्यपि उसने अपने दीर्घकालीन शासन का अधिकाश युद्ध क्षेत्रों में व्यतीत किया था परन्तु साथ ही उसने निर्माण कार्य को किसी प्रकार उपेक्षित नहीं होने दिया जिसके परिणाम स्वरूप प्रासादों मन्दिरों, मठों, मूर्तियों एवं नगरों के निर्माण से उसका नाम शीघ्र ही एक महान गाथा में परिणत हो गया। कल्हण भी लिखते है कि उस स्वाभिमानी राजा ने इस जगतीतल में ऐसा कोई भी नगर, गांव, नदी, समुद्र एवं द्वीप नहीं छोड़ा जहां उसने देव मन्दिर का निर्माण न करवाया हों।[2]

---

1 पुष्पा गुप्ता, संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास, पृ० 127

2 न तल्पुरं न स ग्रामो न सा सिन्धुर्न सोऽर्णतः।
न स द्वीपोऽस्ति यत्रासौ प्रतिष्ठां न विनिर्ममे।। राजरङ्गिणी 4.181

मार्तण्ड मन्दिर

मार्तण्ड वेदोक्त सूर्य का एक नाम है। अदिति के आठ पुत्रों में एक मार्तण्ड या मार्तण्ड भी बताया गया है। ऋग्वेद में वर्णन मिलता है कि अपने सात पुत्रों के साथ स्वर्ग चली गई और मार्तण्ड को उसने फेंक दिया। द्वादश आदित्यों में आठवें आदित्य का नाम मार्तण्ड है।[1] भारतवर्ष के प्राचीन भारतीय वस्तु, मूर्ति एवं भास्कर कला में मार्तण्ड एक विशिष्ट स्थान रखता है उसका भग्नावशेष अभी भी प्रभावोत्पादक एवं विश्व की सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।[2] कल्हण राजतरङ्गिणी में वर्णन करते है कि सम्राट् मुक्तापीड ललितादित्य ने बड़े–बड़े प्रस्तर खण्डों से निर्मित, अंगूर की लताओं से सुशोभित एक नगर बसाया था और उसी नगर में मार्तण्ड भगवान की स्थापना की थी।[3] उस सम्राट ने लोकपुण्य में वहां विष्णु भगवान को भी स्थापित करके मन्दिर का खर्च चलाने के लिये अनेक ग्राम एवं बहुतेरे उपकरण अर्पित किये।[4]

इसके विषय में यह भी वर्णन मिलता है कि मार्तण्ड का प्रथम मन्दिर राजा रणादित्य ने निर्मित किया था, उसका नाम राजेश था। रघुनाथ सिंह लिखते हैं कि कर्नल कौल के अनुसार वहां तीन मन्दिर थे और मुख्य मन्दिर मार्तण्ड का था। प्रांगण की स्तम्भावली एवं मन्दिर का पुनः निर्माण, जीर्णोद्धार राजा मुक्तापीड ललिता दित्य ने करवाया था।[5] मुक्तापीड ललिता दित्य को धार्मिक कृत्यों में विशेष रूचि थी और यह कान्यकुब्ज तथा उनके गांवों की आमदनी उसने अपने द्वारा निर्मित ललितपुर (अब लटपोर) के आदित्य देव (मार्तण्ड) के मन्दिर में लगाई। मन्दिर का दैनिक खर्च इसी से चलता था।[6]

शैली

मार्तण्ड मन्दिर की शैली एवं परिकल्पना को समझने के लिये मुक्तापी ललितादित्य के जीवन, पर्यटन एवं विजय यात्राओं का अध्ययन करना आवश्यक है, बिना उन्हें जाने एवं समझे मन्दिर की मूल परिकल्पना को समझना बहुत कठिन होगा। मुक्तापीड ललितादित्य ने दिग्विजय यात्रा करते हुए धुर दक्षिण, समुद्रतट, कर्नाटक, सौराष्ट्र, उत्तर पश्चिम होते हुए कश्मीर लौटे थे। उन्होंने मार्ग में अनेक

1 ऋग्वेद 10.70 : 8–9
2 ब्रह्माण्ड पुराण, 3.7.278–388
3 सोऽखण्डितारमप्राकारं प्रसादान्त व्यधन्त च।
मार्तण्डस्या दाता द्राक्षास्फीतं च पत्तनम।। राजतरङ्गिणी, 4.192
4 लोकपुण्य पुरं कृत्वा नानोपकरणारवलीम्।
प्रतिपादित वाञ्जिष्णुग्रामैः साकं स विष्णवे।। वही, 4.193
5 जोशराज कृत, राजतरङ्गिणी, परिशिष्ट क, पृ॰ 34
6 कन्नौज का इतिहास तथा महाराज जयचन्द्र की सत्य कहानी, पृ॰ 335

प्रकार के वास्तु, भास्कर, मूर्ति, स्थापत्य आदि कलाओं का दर्शन किया होगा। उसने समुद्र के तट पर प्रातः काल सूर्य का समुद्र से उदय होना तथा सांयकाल पश्चिम में समुद्र में ही सूर्य का अस्त होना देखा था। उसने सूर्य बिम्ब के चारों के उन मन्दिरों को भी देखा होगा, तो सरोवर के मध्य बनाये गये थे। अतः दक्षिण के मन्दिरों की परिकल्पना उसने कश्मीर में साकार करने का प्रयास किया।[1]

मार्तण्ड मन्दिर का स्थापत्य पूर्णतया कश्मीर की देन है परन्तु फिर भी उसमें गान्धार, गुप्त और चीनी प्रकार की शैली को एकीकृत किया था।[2]

मार्तण्ड मन्दिर 60 फुट लम्बा एवं 38 फुट चौड़ा है। इसके चतुर्दिक का प्रांगण अधिक महत्वपूर्ण है, यह 220 फुट लंगा, 142 फुट चौड़ा है। यह चारों ओर लगभग 1 फुट जल से भरा रहता था, जल के मध्य मन्दिर था वह स्तम्भावली मूल से 1 फुट ऊंचा रहता था। मन्दिर में प्रवेश करने के लिए मुख्यद्वार से मन्दिर द्वार तक टुकड़े–टुकड़े पत्थर सेतु तुल्य रखे थे। उन पर होकर भक्त मन्दिर तक पहुंचते थे। लेदरी नदी (झेलम सहायक) से नहर द्वारा जल यहां तक लाया जाता था।[3]

नष्ट

मार्तण्ड मन्दिर के निर्माण के पश्चात् यह बहुत समय तक कश्मीर के आकर्षण का बहुत बड़ा केन्द्र रहा है। जोनराजा और हसन अली के अनुसार, सूफी उपदेशक मीर मुहम्मद हमदानी की सलाह के तहत समाज का इस्लामीकरण करने के उत्साह में सिंकन्दर शाह गिरी (1389–1413) ने मन्दिर को नष्ट कर दिया था।[4]

राजा बुलनर (ललितादित्य) ने इस मन्दिर का निर्माण करने के पश्चात् ज्योतिषियों से पूछा कि यह मन्दिर कब तक कायम रहेगा उन्होंने उत्तर दिया एक राजा सिकन्दर होगा जो इग्यारह सौ वर्ष बाद मन्दिर को नष्ट कर देगा। सिकन्दर चकित हुआ। यद्यपि वह उद्विग्न हो गया। उसने कहा हिन्दु भविष्यवक्ताओं की सत्य भविष्यवाणी को मिथ्या साबित करना चाहते थे। उसने भविष्यवाणी का एक लेख को ताम्रपत्र पर लिखवाकर बाक्स में रखवा दिया था और उस मन्दिर के नीचे गढ़वा दिया था। मन्दिर के खण्डन के समय वह लेख प्राप्त हुआ था। सुल्तान यह भी कहा कि यदि यह लेख मन्दिर पर

1 जोनराज कृत राजतरङ्गिणी, परिशिष्ट–क, पृ॰ 537
2 Studymarathon.com
3 जोनराज कृत राजतरङ्गिणी, परिशिष्ट–क, पृ॰ 534
4 en.m.wikipedia.org

प्रकट होता तो मैं उसे नष्ट नहीं करान का आदेश देता।[1] वर्तमान समय में भी यह भग्नावस्था में कश्मीर में स्थित है। कई भूंकपों ने मंदिर के अवशेषों को गम्भीर रूप से और नष्ट कर दिया।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि प्राचीन काल से लेकर 13वीं शताब्दी तक कश्मीर हिन्दु राजवंशों के अधीन था और कश्मीर में मुख्यतः हिन्दु धर्म से ही सम्बन्धित लोग रहते थे। आठवीं शताब्दी में मुक्तापीड ललितादित्य नामक कार्कोट वंश का शासक हुआ जिसने अपनी अनेक विजय यात्राओं के द्वारा भारत के साथ विदेशों को भी कश्मीर शक्ति से अवगत करवाया। उसने जीते गये युद्धों के द्वारा धन सम्पदा एकत्रित कर ली थी और कश्मीर में बहुत से निर्माण कार्यों को करवाया था। ललितादित्य ने कश्मीर में मार्तण्ड नामक सूर्य मन्दिर का निर्माण करवाया था, जिसके भग्नावशेष अभी भी कश्मीर में देखे जा सकते है। मार्तण्ड मन्दिर के भग्वानशेष सम्राट् मुक्तापीड ललितादित्य कालीन कश्मीर की समृद्धि का बखान करता है। वर्तमान समय में कश्मीर में अधिकांशतः मुस्लिम लोग रहते है इस्लामिकरण के चलते सिकन्दर शाह गिरि ने इस मन्दिर को ध्वस्त कराने के साथ कश्मीर में हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन भी जबरन करवाया था। मुक्तापीड ललितादित्य द्वारा कश्मीर में निर्मित विभिन्न मन्दिरों, मठों, विहारों, नगरों में मार्तण्ड मन्दिर का स्थान अद्वितीय है जिसका अनुमान प्राप्त खण्डरों एवं पुरातात्विक अवशेषों द्वारा लगा सकते हैं।

पुस्तकें

- श्री कल्हण महाकवि विरचिता राजतरङ्गिणी : व्याख्याकार, श्रीरायतेजशास्त्री पाण्डेय : प्रकाशक, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान नई दिल्ली।
- ऋग्वेद : सम्पादक, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, प्रकाशक : वसन्त श्री पाद सातवलेकर स्वायध्याय मण्डल पारडी
- संस्कृत साहित्य का विशद इतिहास : डॉ॰ पुष्पा गुप्ता प्रकाशक :
- ब्रह्माण्डपुराण : सम्पादक, डॉ॰ चमन लाल गौतम
- जोनराजकृत राजतरङ्गिी : भाष्यकार, डॉ॰ रघुनाथ सिंह प्रकाशक, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन वाराणसी।

[1] जोनराज कृत राजतरङ्गिणी, श्लोक 603, पादटिप्पणी, पृ॰ 366